ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 26-440

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

ग्रामीण मनोरंजन पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

निवेदिता कुमारी
शोध अध्येता– समाजशास्त्र, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार), भारत

Received- 19.08.2020, Revised- 23.08.2020, Accepted - 25.08.2020 E-mail: - dr.ramanyadav@gmail.com

सारांश : ***ग्रामीण मनोरंजन का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना कि स्वयं मानव समाज का। मनुष्य जब सभ्यता के विकास के आरम्भिक स्तर पर था, तब भी समूह के सदस्य एक स्थान पर बैठकर, काल्पनिक, कहानियों तथा पारस्परिक अनुभवों के द्वारा एक दूसरे का मनोरंजन करते थे। सभ्यता एवं संस्कृति के विकास के साथ ही मनोरंजन के भी नवीन साधन विकसित होने लगे। जहाँ तक ग्रामीण समुदाय का प्रश्न है, यहाँ मनोरंजन के क्षेत्र में आज परम्परागत और आधुनिकता के तत्वों का समावेश देखने को मिलता है।***

कुंजीभूत शब्द– ग्रामीण मनोरंजन, सभ्यता, विकास, आरम्भिक, सदस्य, काल्पनिक, पारस्परिक, मनोरंजन ।

वास्तविकता यह है कि किसी भी दूसरे समुदाय की तुलना में ग्रामीण जीवन के लिए मनोरंजन एक ऐसी संस्था है जो व्यक्ति को कठिन परिश्रम करने के पश्चात् नवीन उल्लास तथा स्फूर्ति प्रदान करती है और अभावग्रस्त जीवन में मानसिक संतुलन को बनाये रखने का प्रयत्न करती है। वर्तमान युग में मनोरंजन के अनेक ऐसे साधनों का विकास हुआ है जिनसे व्यक्ति अकेले ही मनोरंजन कर सकता है, लेकिन यह साधन व्यक्तिवादी प्रवृति को प्रोत्साहन के कारण ग्रामीण जीवन के लिए उपयोगी नहीं है।

भारत जैसे ग्रामीण देश में केवल मनोरंजन का उपयुक्त समझा जाता है जो लोगों में सामूहिकता की प्रवृत्ति को विकसित कर सके। ग्रामीण मनोरंजन आज भारत की वह समन्वयकारी विशेषता है जो विभिन्न जातियों तथा वर्गों के लोगों को साथ–साथ मिलकर कार्य करने एवं पारस्परिक भेदभाव को दूर करने में सहायता देती है। गाँव में खेले जाने वाले सभी स्वदेशी खेल एक ऐसा आधार है जो उच्च और निम्न जाति के सभी बच्चों को एक दूसरे के निकट लाते हैं।

ग्रामीण मनोरंजन का स्वरूप सार्वभौमिक होता है। भारत में सभी ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग समान प्रकृति के खेल और उत्सव आयोजित होते हैं तथा सभी ग्रामीण ऐसे मनोरंजन को अपने बच्चों के शारीरिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए आवश्यक समझते हैं। मनोरंजन की प्रकृति सामूहिक होती है। यद्यपि पुरुषों और स्त्रियों के लिए मनोरंजन की व्यवस्था पृथक–पृथक होती है। लेकिन प्रत्येक नृत्य, गीत, नाटक अथवा खेलकूद में सामूहिक रूप से सभी व्यक्ति मिल–जुलकर भाग लेते हैं।

ग्रामीण मनोरंजन में धार्मिक विश्वासों का भी समावेश होता है। धर्म के द्वारा स्वीकृत त्योहारों और उत्सवों का आयोजन ग्रामीण मनोरंजन का आधार है। परिवार ग्रामीण मनोरंजन का मुख्य केन्द्र है। जन्म, विवाह एवं अन्य संस्कारों के रूप में इस मनोरंजन का आरम्भ होता है और वहीं से इसका गाँव के अन्य क्षेत्रों में विस्तार होता है।

ग्रामीण मनोरंजन की प्रकृति अत्यधिक सरल और सामान्य होती है जिसमें भाग लेने के लिए किसी विशेष योग्यता अथवा प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। इसमें प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुविधा एवं रुचि के अनुसार भाग ले सकता है। इसमें ऐसी कोई कृत्रिमता नहीं होती जो खिलाड़ी, अभिनेता अथवा मनोरंजन प्रदान करने वाले व्यक्ति को जनसामान्य से पृथक करें।

औद्योगीकरण और नगरीकरण का प्रभाव केवल नगरों की सीमाओं तक कैद नहीं रह गए हैं। आवागमन की सुविधाओं ने और विज्ञान के आविष्कारों ने इसे सुदूर ग्रामीणों तक पहुंचा दिया है। नगरीय मनोरंजन के साधन अब गांव में भी सरलता से उपलब्ध है। वे गांव जो नगर के बहुत निकट हैं वहां टेलीविजन देखा जा सकता है। ट्रॉन्जिस्टर और टेप–रिकार्डर ग्रामीण अंचलों में सरलता से देखे जा सकते हैं। अब ग्राम निवासी राजा, रसिया, बिरहा, बारहमासा, आल्हा–ऊदल की गाथाओं का गाना पसन्द नहीं करता। ग्रामीण युवकों की जुबान पर आज फिल्मी गीत है। नौटंकी और स्वांग देखने की अपेक्षा वे सिनेमा देखना अधिक पसन्द करते हैं। ग्रामीण मैदानों में अब फुटबाल, बास्केट बाल, वालीबाल और क्रिकेट अधिक प्रचलित होते जा रहे हैं। आश्चर्य तो यह देखकर होता है कि ग्रामीण शादी ब्याह के अवसर पर अब युवक रॉक एण्ड रोल, टिवस्ट और चाचा जैसा नृत्य करने लगे हैं। लड़के के घर पर लाउडस्पीकर से फिल्मी संगीत की धुन और गीत

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

बजते हैं। ये ग्रामीण लोक गीत को निगले जा रहे हैं। वास्तविकता तो यह है कि ग्रामीण समाज में सामूहिक भावना और भागेदारी दिन–प्रतिदिन समाप्त होती जा रही है और उसके स्थान पर व्यक्तिवाद तीव्रता से बढ़ रहा है। अब ट्रैक्टर से खेती होती है और मनोरंजन के नाम पर ट्रांजिस्टर बगल में रखा होता है। इस तरह ग्रामीण समाज में भी मनोरंजन का मशीनीकरण होता जा रहा है। मशीनी और वैज्ञानिक आविष्कारों से मिश्रित चीजें ही मनोरंजन के साधन बनते जा रहे हैं और ग्रामीण समाज की परम्परात्मक लोक कलायें समय की धूलि में दबती जा रही है।

यहाँ एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि क्या भविष्य में ग्रामीण मनोरंजन अपने मौलिक स्वरूप में जीवित रह सकेगा? परिवर्तन अपनी छाप किसी–न– किसी रूप में अवश्य डालता है। ग्रामीण मनोरंजन के प्रकारों में अनेक परिवर्तन सहज दिखायी पड़ते हैं। ग्रामीण वाद्य यंत्रों और वहां के स्वाभाविक संगीत और लोक गीतों की धुनों पर नगर के संगीत का प्रभाव पड़ रहा है, किन्तु इनकी विषय वस्तु में अभी विशेष परिवर्तन नहीं आया है। वास्तव में, जब तक ग्रामीण समाज हमारे मध्य है तब तक ग्रामीण मनोरंजन के परम्परात्मक स्वरूप भी विघटित होने पर वे ग्रामीण समाज में प्रचलित रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. घोष, बी.एन. (1985) : साइन्टिफिक मेथड्स एण्ड सोशल रिसर्च, स्टलिंग पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
2. टैगोर, रवीन्द्र नाथ (1961) : द रिलीजन ऑफ मैन लंदन, अनविस बुक्स।
3. दूबे, एस.सी. (1960) : इण्डियाज चेंजिंग विलेजेज, लंदन, रोटलेज एण्ड केशन पॉल।
4. दूबे, एस.सी. (1960) : मैन एण्ड कल्चर, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*